Model Answer

AS-3026

B.A. LL.B. (Third Semester) Examination-2013

(Foundation Course-Hindi)

प्र.१ - निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर दीजिये- **१५*२=३०**

(i) देवनागरी लिपि में।

(ii) ग्यारह स्वर होते है।

(iii) (क) व्याकरण सम्मत (ख) केन्द्रोन्मुखता (ग) स्वाभाविकता (घ)प्रयोग बहुलता

(iv) प्रेमचंद

(v) उज्ज्वल तथा कवयित्री

(vi) चंद्रमा:- निशाकर, इन्दु, शशि, शशांक, सुधाकर, राकापति, निशापति, हिमांशु, निशानाथ, सुधांशु, राकेश, हिमकर, कलानिधि,

कामदेव:- मदन, मनोदभव, पंचशर, मनसिज, मन्मथ, कंदर्प, मनोज, मयन, केतन, पुष्पधन्वा, स्मर, मीनकेतु, रतिपति, मकरध्वज, कुसुमशर

(vii) प्राचीन तथा नास्तिक

(viii)

मुहावरा	कहावत
(क) मुहावरा वाक्यांश है।	(क) कहावत वाक्य है।
(ख) मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है।	(ख) कहावत का स्वतंत्र प्रयोग होता है।
(ग) मुहावरे का कार्य चमत्कार उत्पन्न कर भाषा-सौन्दर्य को स्थापित करना हैं।	(ग) कहावत कथन में व्यक्त अनुभव या विचार का सारगर्भित और स्थायी निचोड़ है।
(घ) मुहावरे में काल, वचन और पुरुष के अनुरूप परिवर्तन होता है।	(घ) कहावत का स्वरूप अपरिवर्तित रहता है।

(ix) (अ) भारतीय/भारतवासी

(ब) मध्यान्ह

(x) सन १९५५ ई० में।

(xi) (अ) संप्रेषणशीलता और प्रभावात्मकता (ब) उद्देश्य के अनुरूप अध्ययनशील अनुवाद

(xii) (अ) गहन अध्ययनशील (ब) सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि

(xiii) दो प्रकार के होते हैं।

(अ) अनौपचारिक (ब) औपचारिक

(xiv) (क) अमृत:- जल, पारा, दूध, अन्न इत्यादि

(ख) जलज:- कमल, मोती, शंख, मछली, चंद्रमा, सेवार इत्यादि

(xv) संस्मरण

प्र.२ लघुत्तरी प्रश्न - **५*४=२०**

(i) 'नशा' कहानी का संक्षिप्त कथानक प्रस्तुत करना चाहिए।

(क) नशा कहानी का प्रकाशन वर्ष एवं लेखक का नाम।

(ख) पत्रों का विवरण।

(ग) पूँजीपतियों की राजशाही ठाट-बाट।

(घ) नौकरों की दुर्दशा का चित्रण।

(ड़) कहानी का सारांश लिखना अपेक्षित हैं।

(ii) अनौपचारिक पत्रों की विशेषताएँ-

(क) दो संस्कृतियों एवं रीतियों के भाव प्रदर्शित होना।

(ख) पत्र-लेखन में चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण इत्यादि सभी एक साथ झलकते है।

(ग) पत्रलेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

(घ) आधुनिक युग में पत्रलेखन को 'कला' की संज्ञा दी गयी है।

(iii) पल्लवन के दो गुण

(क) मूल भाव से पोषक भावों की खोज।

(ख) अनुक्रम से लेखन।

(ग) आवश्यक दृष्टांतों, उदाहरणों और विवरणों का लेखन।

(घ) प्रारूप का निरीक्षण।

(ड़) लेखन।

(iv) मानक भाषा का स्वरूप निर्धारण

(क) मानक भाषा का सामान्य अर्थ।

(ख) मानक भाषा से अभिप्राय क्या है।

(ग) मानक भाषा किसी राष्ट्र, राज्य या समाज की प्रतिनिधि तथा आदर्श भाषा होती है।

(घ) मानक भाषा का रूप अंतराष्ट्रीय संदर्भों में व्यवहार में लाया जाता है।

(v) मुहावरा तथा लोकोक्ति/कहावत के अंतर का स्पष्टीकरण

प्र.१ के (viii) में दिया गया है।

(vi) अनुवाद के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए-

(क) आधुनिक युग में अनुवाद का महत्त्व ।

(ख) दो संस्कृतियों का ज्ञानार्जन।

(ग) भाषांतर

(घ) स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा की ओर प्रवेश करना।

(vii) लिपि तथा भाषा का अंतर

(क) लिपि से ही किसी भाषा के शुद्ध, परिलिखित और मूल रूप सुरक्षित रहता है।

(ख) संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओं का साहित्य अपने 'लिपि' के कारण ही अपने मूल मे सुरक्षित है।

(ग) मानक शब्द का सामान्य अर्थ है।

(घ) मानकीकरण सोपानों का उल्लेख।

(viii) कम्प्यूटर में हिन्दी के प्रयोग को लिखिए-

यह एक भारी गलत फहमी है की कम्प्यूटर की भाषा अँग्रेजी है और लिपि रोमन। ग्यारह भाषाओं का एक समन्वित कोड बनाया गया जिसमे उर्दू को छोडकर। देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर पर कार्य करना आसान है। हिन्दी भाषा को कम्प्यूटर की भाषा में रूपांतरित करने की दिशा में हार्डवेयर एवं सोफ्टवेयर के क्षेत्र हुए प्रयासों से हिन्दी में कम्प्यूटर पर आसानी से कार्य किया जा सकता है।

प्र.३:- दीर्घोत्तरीय प्रश्न - **२*१५=३०**

ससंदर्भ व्याख्या-

(i) "रिवाज के मुताबिक ..... मयूर-पंख...।

(१) लेखक का नाम - गुलशेर खाँ शानी

(२) गद्य की विधा - संस्मरण

(३) संग्रह का नाम - "साल वनों के द्वीप"

व्याख्या:- कोशी की बाघ द्वारा मृत्यु के बाद उसके शव का दाह संस्कार करना गाँव वालों द्वारा वनदेवता की पूजा करना। देवान नामक युवक पर देवता को बुलाना। आदिवासियों में अंधविश्वास का कारण अशिक्षा है। एक जीव के बदले दूसरे जीव की बलि देना आदि-आदि।

(ii) देवनागरी लिपि के स्वरूप का स्पष्टीकरण

(क) यह भाषांतर्गत आने वाले अधिक से अधिक ध्वनि-चिह्नो (वर्णो) से सम्पन्न है। यह लेखन एवं वाचन दोनों ही दृष्टियों से सरल एवं सहज है। राष्ट्र का प्राचीनतम वैभवशाली वङ्ग्मय इसी में लिपिबद्ध है। यह देववाणी से सम्बद्ध होने कारण शास्त्रबद्ध है। इसके प्रत्येक वर्ण का सर्वत्र उच्चारण होता है।

(iii) ईश्वरी का चरित्र-चित्रण

शिक्षा के दौरान अमीर मित्र का सहयोग, ईश्वरी पर भी क्षणभंगुर अमीरी का नशा होना। समय के साथ-साथ व्यक्ति का परिवर्तनशील होना। ईश्वरी में विचारों, सिद्धांतों का परिवर्तनशील होना। ईश्वरी का ट्रेन को देखकर उत्साहित होना इत्यादि।

Prepared by Mr. Suresh Kumar